इस बार 'रंग तरंग' के लिए शिक्षिकाओं ने एक नया प्रयोग किया। जिसमें एक कक्षा के बच्चों ने अलग-अलग थीम पर चित्र बनाए और किसी अन्य कक्षा के बच्चों ने उन चित्रों में से अपनी पसन्द के चित्र चुन कर उन पर कहानियाँ लिखीं। उम्मीद है आपको ज़रूर पसन्द आयेंगी।

- हामिदा अलवी
प्रधानाचार्या

नगर निगम सहशिक्षा प्रतिभा विद्यालय, निज़ामुद्दीन (पश्चिम), नई दिल्ली

हुमायूँ का मकबरा। सुन्दर नर्सरी। हजरत निज़ामुद्दीन बस्ती

शहरी विकास नवीकरण

आग़ा ख़ाँ डेवलेपमेंट नेटवर्क

रंग तरंग

अप्रैल 2014

परी लोक की सैर

एक लड़की थी। उसका नाम सपना था। सपना बहुत खुबसूरत थी बिलकुल परीयों जैसा लगती थी। लेकिन उसकी कोई सहेली नहीं थी। इसलिए वह उदास रहती थी। एक दिन उसके घर के पास एक परिवार रहने आया। उसमें एक लड़की थी जिसका नाम सिमरन था और वह भी अकेले–अकेले ही खेलती रहती थी। सपना ने जब सिमरन को खेलते देखा, तो वह उसके पास गई और उससे कहा, "आप मेरे साथ खेलेंगीं"? तो सिमरन ने कहा... "हाँ ठीक है" और वो दोनो खेलने लगी वह लोग खेलते–खेलते एक पेड़ के पास पहुँची। उस पेड़ पर सेब लटके हुए थे। वह दोनो मज़े–मज़े से सेब खाने लगीं। अब वह थक गईं और बैठ कर सोचने लगीं कि अब हम क्या करें। हम थक चुके हैं फिर वह घर वापस आने लगीं रास्ते में उन्हें परी मिल गई। परी ने उनसे कहा "तुम मुझे बहुत अच्छी लग रही हो, क्या तुम मेरे साथ परीलोक चलोगी?" उन दोनों ने कहा, "हम तुम्हें नहीं जानतीं।" परी ने कहा, "मैं एक परी हूँ और जो तुम चाहो वह मैं तुम्हें दे सकती हुँ।" तो वो दोनो राज़ी हो गईं और कहने लगीं, "क्या तुम हमें परी लोक दिखा सकती हो?" परी ने कहा "हाँ", फिर सपना ने कहा "लेकिन मेरी मम्मी मुझे जाने नहीं देंगी।" तो परी ने कहा "मैं तुम्हें अपने परों में छुपाकर जल्दी से परी लोक की सैर करवा दुंगीं।" परी ने अपने परों में दोनो सहेलियों को बैठाकर ले गई और परी लोक में घुमाया। दोनों बहुत खुश हुईं और परी ने उन्हें वहाँ से बहुत सारे फल दिए। अब परी अपने परों पर ही बैठाकर उनके घर वापस ले आई। अब वह तीनों दोस्त हैं।

चित्राकनः –
अलिशा, मयम, नाहिद

कहानीः – (कक्षा 4)
नाहिद, अलीशा, अफसाना, मरियम

आँगनवाड़ीयों के नन्हें-मुन्नों कि कला

आँगनवाड़ीयों में बाल दिवस

चलो, आँगनवाड़ी में गिनती सीखें

बड़े घर का सपना

एक गाँव था जिस में बहुत ही छोटे–छोटे घर थे। किसी को भी अपने घर में आराम नहीं मिलता था। गाँव के सब लोग हमेशा उसी घर के बाहर बैठे रहते। उस गाँव में एक बड़ा घर था। हर कोई उस घर में रहना चाहता था, लेकिन उस घर में केवल पाँच लोग ही रहते थे। अम्मी, पापा, बाज़ी, बड़े भाई और नन्हा सोनू। उन्हें अपना घर बहुत प्यारा था क्योंकि उनके घर में सब सामान था, अलमारी, बड़ा सुन्दर दरवाज़ा और पलंग।

एक दिन उन्होंने हुँमायू का मकबरा जाने का प्लान बनाया। सुबह सब जल्दी उठे, नहाए नाश्ता किया और घूमने चले गए। और वह उस दिन घर का ताला लगाना ही भूल गए। और जब वह घूम कर घर वापस आए तो देखा कि उनके घर में सभी गाँव वाले उनके घर में बैठे हैं! पापा–अम्मी को यह देखकर बहुत गुस्सा आया लेकिन नन्हा सोनू बोला "उनके घर बहुत छोटे हैं – थोड़ी देर उनको यहाँ बैठे लेने दीजिए न ?" पापा–अम्मी ने सोनू की बात मान ली और सब बहुत खुश हुए।

कहानीः – (कक्षा 2)
मौहमद, यासमीन, अब्दुल रहीम, यामिन, रेहान

चित्राकनः –
सोनिया, गीता, इन्शा, इक़रा

बारिश में शादी

सुबह का समय था। चारों तरफ़ खुशी का माहौल था। खुशी से चिड़िया और बत्तख गा रही थीं। क्योंकि आज जंगल की परी की शादी थी। परी बहुत खूबसूरत थी और उस का नाम था सोनी। उस की शादी एक लकड़हारे से हो रही थी। वो बहुत ईमानदार था इसीलिए सोनी उसे बहुत पसंद करती थी। लाकड़हारे ने अपने दोस्तों को भी शादी में बुलाया था। लेकिन तेज़ बारिश होने की वजह से उसके दोस्त शादी में न आ सके। परी सोनी का एक दोस्त थी। उसका नाम सोनल था। सोनल भी उन दोनो की शादी में आना चाहती थी लेकिन बारिश इतनी ज्यादा थी कि वो घर पर बैठकर ही बहुत अफसोस कर रही थी। सोनी और लकड़हारे ने बहुत देर तक सबका इन्तज़ार किया और बाद में दुखी मन से दोनों ने शादी कर ही ली। दोनों खुशी–खुशी परीलोक जाने लगे। वहाँ पहुँच कर उन्होंने देखा कि बहुत सी परियाँ उनका स्वागत करने के लिये इन्तज़ार कर रही थीं। जिसमें सोनी और लकड़हारे के दोस्त भी शामिल थे। परी और लकड़हारा सबको देखकर बहुत खुश हुए।

कहानीः – (कक्षा 5)
महवीश, रोशनी, शबाना

चित्राकनः – रुकसाना,
ज़ाकिर, खुशनुमा, सबीना

जनवरी के महीने में कक्षा पहली से पाँचवी तक के बच्चों की खेल-कूद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। उद्घाटन - उप शिक्षा निदेशक, **M.C.D** ने किया। इसमें स्कूल के सभी बच्चों ने भाग लिया।

साथ ही में आँगनवाड़ी और **MCD** स्कूल के नर्सरी कक्षा में पढ़ने वाले बच्चों की खेल प्रतियोगिता आयोजित की गई। इसमें कुल 100 बच्चों ने भाग लिया।

स्कूल में पढ़ने वाले बच्चों के माता-पिता के लिए एक मीटिंग आयोजित की गई। जिसमें उनसे स्कूल की शिक्षा के कई पहलुओं पर बातचीत हुई।

निज़ाम नगर कि आँगनवाड़ी 20 में पढ़ने वाले कुछ बच्चों की अम्मियों ने बाल भवन के कलाकारों के साथ मिलकर दीवारों को अपने चित्रों से सजाया।

निज़ामुद्दीन बस्ती के थियेटर ग्रुप ‘आगाज़’ नें हैरीटेज स्कूल, बसंत कुंज के बच्चों के सामने अपना नाटक ‘दुनिया सबकी’ पेश किया।

रानी की रिंग

एक रानी थी। वह जब हँसती थी तो सारे फूल खिल जाते थे। रानी जैसे कपड़े पहनती तो वैसी ही रिंग पहनती थी। एक दिन रानी नाँव मे बैठकर घूमने जा रही थी। रानी जैसे ही नाँव में बैठने जाती है तो उसकी रिंग गिर जाती है। रानी रोने लगी। रोते–रोते रानी महल वापस जाती है और अपने सिपाहियों को रिंग ढूँढने के बोलती है। सिपाही रिंग ढूँढने जातें है। रिंग ढूँढते–ढूँढते सिपाही को एक जादूई पेड़ मिलता है। सिपाही जाकर रानी को बताते है। रानी बहुत खुश हो जाती है और पेड़ देखने जाती है। पेड़ पर आइस्क्रीम, टॉफी, आम और बहुत सारे खेल खिलौने थे। तभी रानी की नज़र अपनी रिंग पर पड़ती है। रानी को उसकी रिंग मिल जाती है रानी खुश हो जाती है और मजे करती है।

चित्राकनः –
मोहसिन, अनीस, अलिशा

कहानीः – (कक्षा 3)
इकरा, अंजली, मोनिका, सानिया
रागिनी, समीरा

बूझो तो जानें

– हज़रत अमीर ख़ुसरो की पहेलियाँ

एक गुनी ने ये गुण कीना,
हरियाल पिजंरे में दे दीना,
देखो जादूगर का कमाल
डाला हरे, निकाले लाल।

बीसों का सर काट दिया,
ना मारा ना खून किया।

बानी रंगीली शरम कि बात,
बे मौसम आई बरसात
यही अचंम्भा मुझ को आये,
खुशी के दिन क्यों रोती जाए।

उत्तर- 1.पान, 2.नाखून, 3.फुहारा

बूझो तो जानें